अध्याय 2

परमेश्वर

मैं एक छोटा बच्चा था जब मेरी माता ने मुझे सिखाया था कि तूफानी तेज हवा और वर्षा के समय कैसे मनोरंजन करें। वह अपनी बांहों में मुझे घेर लेती थी जब हम लेटिन अमेरिका में अपने घर की खिड़की के पास खड़े होते थे। हमारे सामने के आंगन में केले के वृक्षों में तेज हवा के झोंकों से उनकी उछलती हुई पत्तियां बारिश से गीली, बिजली की चमक से चमकीली, देखने में शानदार लगती थीं। बिजली की कड़क और बादल की गरज मानों ढोल पीट कर घास एवं फूलों को वर्षा के प्रति प्रेम की कहानी बता रहे हों।

लोग तूफान से डरते या आनन्दित हो सकते हैं। यह इस पर निर्भर है कि उन्हें इसके बारे में क्या बताया गया है। यह भी जानना जरूरी है कि यह कैसा तूफान है — लाभदायक या हानिप्रद।

तूफान को आप कैसे समझ सकते हैं? हवा, वर्षा एवं बिजली का आकार कैसा होता है? क्या आप तूफान को बोतल में रख सकते हैं? बेशक नहीं। तूफान को इसके विभिन्न भागों के अध्ययन के द्वारा ही समझा जाता है। जैसे ठण्डी हवा, गर्म हवा से मिलती है। इसके प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है जमीन एवं समुद्र में इसका असर होता है।

एक तरह से परमेश्वर की तुलना तूफान से की जा सकती है। कुछ लोग उससे डरते हैं एवं कुछ उससे प्रेम रखते हैं। यह इस पर निर्भर करता है कि उन्हें इसके बारे में क्या बताया गया है।

आप परमेश्वर को नहीं देख सकते किन्तु वह क्या करता है इसका अध्ययन कर सकते हैं। पहले पाठ में हमने सीखा है कि बाइबल परमेश्वर के बारे में बताती है — उसके गुणों एवं मानव जाति से उसका व्यवहार। इस पाठ में हम बाइबल में देखकर परमेश्वर के बारे में बताई गई बहुत सी बातों में से कुछ के बारे में अध्ययन करेंगे।

इस पाठ में आप अध्ययन करेंगे....

उसका हमसे सम्बन्ध

हमारा उससे सम्बन्ध

यह पाठ आपकी सहायता करेगा कि....

- उसके अनेक गुणों के नाम बतायें
- आपकी विचार भावना परमेश्वर के प्रति क्या होनी चाहिए इसकी व्याख्या कर सकें।

उसका हमसे सम्बन्ध

उद्देश्य १. परमेश्वर के कम से कम पांच गुणों के नाम बतायें।

यूहन्ना ४:२४ में बाइबल बताती है कि परमेश्वर आत्मा है। शब्दकोश बताता है कि आत्मा एक जैवीय सिद्धान्त है जो जीवन देता है। चूंकि परमेश्वर सृजनहार है इसका अर्थ है कि वह एक दैवीय शक्ति है जो अपनी सृष्टि को जीवन देता है। चूंकि वह आत्मा है उसे देखा नहीं जा सकता जब तक कि वह आपको किसी सदृश्य रूप में प्रगट न करे।

उसने अपने आप को अपने पुत्र के द्वारा दिखाया। यूहन्ना १:१४ बताता है, "और वचन देह धारी हुआ और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी जैसी पिता के एकलौते की महिमा।"

परमेश्वर ने अपने को पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, तीन व्यक्तित्व में प्रकट किया है जो गॉड हेड या त्रिएकता कहलाती है। कई स्थानों में इन तीनों का वर्णन किया गया है जिसमें से एक मत्ती २८:१९ है। "इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रआत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।"

परमेश्वर के बारे में अधिक जानने का एक अच्छा रास्ता उसकी योग्यता और गुणों का अध्ययन है। परमेश्वर भला, पवित्र, न्यायी, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञानी, और अनन्त है। आइए हम उन पदों को देखें जो इन गुणों को साथ ही दूसरे गुणों को भी बताते हैं।

निर्गमन ३४:६ बताता है "और यहोवा उसके सामने होकर यों प्रचार करता हुआ चला, कि यहोवा, ईश्वर दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त और अति करुणामय और सत्य है।"

लैव्यव्यवस्था ११:४४ बताता है "क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। इस कारण अपने को शुद्ध करके पवित्र बने रहो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।"

यह सच्चाई कि वह सर्वशक्तिमान है इसे दानिय्येल ४:३५ में भी देखा जा सकता है। यह बताता है "पृथ्वी के सब रहने वाले उसके सामने तुच्छ गिने जाते हैं और वह स्वर्ग की सेना और पृथ्वी के रहने वालों के बीच अपनी ही इच्छा के अनुसार काम करता है और कोई उसको रोककर उससे नहीं कह सकता है, तूने क्या किया है?

परमेश्वर सब कुछ जानता है। कुछ भी परमेश्वर से छिपा नहीं है। सारी सृष्टि का सब कुछ उसकी आंखों के सामने खुला रखा है और हम सभों को उसे ही लेखा देना है।

प्रकाशित वाक्य १०:६ हमें बताता है कि परमेश्वर अनन्त है। एक स्वर्गदूत ने "परमेश्वर के नाम में शपथ खाकर कहा कि परमेश्वर जो युगानुयुग जीवता रहेगा और जिसने स्वर्ग को और जो कुछ उसमें है और पृथ्वी को और जो कुछ उस पर है और समुद्र को और जो कुछ उसमें है, सृजा।"

कुछ पदों को जिसे हमने देखा जो हमें परमेश्वर के बारे में थोड़ा चित्रण करते हैं, हमारी सहायता यह जानने में करते हैं, कि वह कितना महान है, वह सर्वशक्तिमान और बलवान है, किन्तु वह अनुग्रहकारी एवं दयालु भी हैं। और वह हमसे अर्थात् अपनी सृष्टि से निकट संबंध रखना चाहता है।

जो आपको करना है

१. धर्मशास्त्र के उद्धरणों को पढ़ें एवं निम्न कथनों में सही शब्दों की पूर्ति करें :

अ. मत्ती ६:९-११ — परमेश्वर की तुलना एक प्रेमी .... से की गई है जो अपने .... की आवश्यकता की पूर्ति करता है।

ब. यशायाह ६६:१३ — परमेश्वर वैसे ही शान्ति देता है। जैसे .... अपने .... को देती है।

२. निम्नलिखित धर्मशास्त्र के उद्धरणों को देखें। प्रत्येक उद्धरण में परमेश्वर के जिन गुणों को व्यक्त किया गया है लिखें

जैसे : पवित्रता, क्षमा तथा ऐसे अन्य

अ. २ राजा ४:४२-४४ ....

ब. उत्पत्ति ९:१३-१७ ....

स. २ इतिहास ७:१३-१४ ....

ड़. निर्गमन ३:७ ....

इ. भजन संहिता ९७:१०-१२ ....

यदि आप परमेश्वर के गुणों के बारे में अधिक जानना चाहते हैं तो ऐसा अभ्यास जैसे अभी आपने किया काफी सहायक होगा। दूसरे भजन संहिता का चुनाव करें और जैसे उन्हें पढ़ें परमेश्वर के चित्रण लिख लें जो विशेषतः आपके लिए अर्थपूर्ण हों। भजन संहिता १०३ और १३९ परमेश्वर एवं उसका हमारे प्रति चिन्ता के सुन्दर चित्रण से भरे हुए हैं।

अपने उत्तरों की जांच करें

हमारा उससे सम्बन्ध

उद्देश्य २. यह जानना कि हमारी पहली जिम्मेवारी परमेश्वर के प्रति है।

मत्ती २२:३७ में यीशु ने कहा "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख।"

परमेश्वर के प्रति प्रेम प्रगट करने के विभिन्न तरीके हैं। हमारी उपासना एवं प्रशंसा करना हमारे प्रेम को शब्दों में उसे सीधे व्यक्त करते हैं।

अब, सुनो प्रभु परमेश्वर तुम से क्या मांग करता है। परमेश्वर को श्रद्धा दो एवं जो कुछ वह कहे, उसे करें।

''और अब हे इस्राएल, तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ से इसके सिवाय और क्या चाहता है कि तू अपने परमेश्वर यहोवा का भय माने और उसके सारे मार्गों पर चले उस से प्रेम रखे और अपने पूरे मन और अपने सारे प्राण से उसकी सेवा करे। और यहोवा की जो जो आज्ञा और विधि मैं आज तुझे सुनाता हूं उनको ग्रहण करे, जिससे तेरा भला हो।''

यदि हम अपना प्रेम दिखाना चाहें तो हम उन निर्देशों का पालन करें जो उसने अपने वचन में हमें दिये हैं।

परमेश्वर के प्रति प्रेम प्रगट करने का दूसरा तरीका दान तथा दूसरों के साथ सहभागिता करना है। १ यूहन्ना ३:१७-१८ कहता है ''पर जिस किसी के पास संसार की सम्पत्ति हो और वह अपने भाई को कंगाल देखकर उस पर तरस खाना न चाहे, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम क्यों कर बना रह सकता है? हे बालको, हम वचन और जीभ ही से नहीं, पर काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें।''

प्रेम जो आज्ञाकारिता एवं सहभागिता से भरा हो वह सन्तुष्ट करने वाला एवं प्रतिफलित होगा। लूका १०:२८ में यीशु कहता है कि यदि हम परमेश्वर से सबसे अधिक प्रेम रखेंगे तो ''हम जीयेंगे'' कुछ लोग सोचते हैं कि ''वास्तविक जीवन'' धन, शक्ति एवं पद है। किन्तु ये चीजें हमें कभी भी सन्तुष्ट नहीं कर सकतीं क्योंकि हम परमेश्वर की समानता में उसकी महिम के लिए बनाए गए हैं। हमारी आत्माएं आत्मिक चीजों से सन्तुष्ट होनी चाहिए।

वास्तविक जीवन जीना परमेश्वर से प्रेम करना है यीशु ने कहा "इसलिए पहले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी" (मत्ती ६:३३)

जो आपको करना है

३. सही कथन के सामने के अक्षर में वृत्त खींच दें। सबसे अधिक आपका प्रेम

अ. शक्ति के लिए होना चाहिए जिससे आप अपने जीवन के वश में रह सके।

ब. परमेश्वर के लिए होना चाहिए, और उस प्रेम को प्रयोग में लाइए।

४. निम्नलिखित पदों को पढ़ें और उनमें वृत्त खींचें जो आपको परमेश्वर के प्रति पहली जिम्मेवारी को बताते हैं।

अ. व्यवस्थाविवरण ६:५

ब. व्यवस्थाविवरण १०:१२

स. व्यवस्थाविवरण १३:३

ड. यहोशू २२:५

इ. मरकुस १२:३०

फ. यहूदा २१

अपने उत्तरों की जांच करें

१. अ. पिता, बच्चे
 ब. माता, बच्चे

३. ब. परमेश्वर के लिए होना चाहिए और उस प्रेम को प्रयोग में लाइए।

२. आप अपने शब्दों में व्यक्त कर सकते हैं किन्तु आपके उत्तर कुछ इस प्रकार होंगे।

 अ. सर्वशक्तिमान
 ब. दयावान
 स. क्षमा करने वाला
 ड. सर्वज्ञानी या सर्वदर्शी
 इ. पवित्र

४. आपको सभी अक्षरों पर वृत्त खींच देने चाहिए क्योंकि प्रत्येक पद बताता है कि परमेश्वर से प्रेम रखना आपकी पहली जिम्मेवारी है।